नई दिल्ली: २७ नवंबर २०१०

फादर कामिल बुल्के का सामाजिक प्रभाव

पद्मभूषण डॉ॰ फादर कामिल बुल्के जन्म-शताब्दी समारोह की राष्ट्रीय समिति के प्रमुख, अति माननीय पद्मभूषण शशि भूषण जी, सभापति-मंडल के अति वरिष्ठ सदस्यगण - डॉ॰ ए॰ आर॰ किदवई साहब, प्रोफेसर आबिद हुसैन साहब एवं श्री आई॰ पी॰ आनन्द जी - समायोजक मण्डल के सम्माननीय सदस्यगण एवं सलाहकार मण्डल के वरिष्ठ मनीषी, शिक्षाविद् और वैज्ञानिकगण, जन्म-शताब्दी समारोह की राष्ट्रीय समिति के विशिष्ट सदस्यगण, सचिवालय के कर्मठ सदस्यगण, प्रमुख संयोजक श्री प्रशान्त चन्दर जी, कार्यक्रम संयोजक मण्डल के सम्माननीय सदस्यगण - विद्वता, अध्यवसाय और लोकसंग्रही प्रयासों के पारखी देवियो एवं सज्जनो,

मसीही विश्वास के मुखर संदेशवाहक और राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रबल हिमायती, डॉ॰ फादर कामिल बुल्के को श्रद्धा-सुमन अर्पित करने के लिए इस सभा में उपस्थित सभी बुद्धिजीवियों को सम्बोधित करना मैं अपना सौभाग्य समझता हूँ। आप ने इसके लिए मुझे योग्य समझा और आमंत्रित किया। मैं आपका धन्यवादी हूँ।

फादर बुल्के का संक्षिप्त जीवनवृत्त मात्र ही उनके जीवन में ईश्वर की योजना की पर्याप्त झलक दे जाता है। उनका जन्म १ सितम्बर १९०९ को उत्तरी बेल्जियम के फ्लैण्डर्स क्षेत्र में राम्सकपेल नामक गांव में हुआ था। फादर बुल्के के भारतीय मित्रों ने उनके जन्मस्थान और महाकवि तुलसीदास जी की रामकथा के साथ रोमांचक संयोग को देखा। कौन जाने! संभवतः इसी संयोग ने फादर बुल्के को रामकथा के विस्तृत और अभूतपूर्व अध्ययन के लिए उत्प्रेरित किया हो! इस रोचक संयोग पर खुद फादर बुल्के चुटकियाँ लिया करते थे। वे अकसर यह भी कहा करते थे - "मरणोपरान्त मैं स्वर्ग में महाकवि तुलसीदास जी से अवश्य मिलना चाहूँगा।" ईश्वर करे कि उनकी यह मनोकामना पूरी हो। अतिशयोक्ति नहीं कि फादर बुल्के के श्रेष्ठ योगदान ने उन्हें हिन्दी साहित्य में उत्कृष्ट स्थान प्रदान किया है। हाईस्कूल की शिक्षा समाप्त कर मेघावी छात्र कामिल बुल्के ने लुवेन विश्वविद्यालय में इंजीनियरिंग का अध्ययन किया। इस दौरान वे फ्लेमिश भाषा के संरक्षण और प्रचार-प्रसार के लिए प्रयत्नशील रहे, क्योंकि स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद फ्रेंच-भाषियों ने फ्लेमिश भाषा को दबा कर रखा था। उल्लेखनीय है कि भारत में इससे कहीं अधिक जोश के साथ वे हिन्दी को राष्ट्रभाषा-रूप में स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील रहे।

पढ़ाई के क्रम में फादर बुल्के ने धर्मसंघी जीवन के लिए ईश्वर की बुलाहट सुनी और उन्होंने १९३० में येसु संघी नवशिष्यालय में प्रवेश किया। आध्यात्मिक और शैक्षिक निर्माण के बाद उन्होंने राँची मिशन भेजे जाने की मंशा जाहिर की। वे नवम्बर १९३६ में राँची पहुंचे। स्मरणीय है कि अपनी मातृभाषा फ्लेमिश के अलावा उनके शैक्षिक निर्माण में लैटिन, ग्रीक और जर्मन भाषाओं में दक्षता शामिल थी। भारत आने पर उन्हें गुमला-स्थित सन्त इग्नासियुस उच्चविद्यालय में गणित पढ़ाने का काम सौंपा गया। शेष समय में वे छात्रों के साथ हिन्दी कक्षा में शामिल होते

थे। तभी उन्होंने हिन्दी भाषा पर अधिकार को अपना लक्ष्य बना लिया। बाद में उन्होंने कुर्सियोंग में ईशशास्त्र का अध्ययन किया और १९४१ में उनका पुरोहिताभिषेक हुआ।

तदुपरान्त कुछ समय कलकत्ता में बिताकर उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संस्कृत साहित्य में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। अन्ततः १९४९ में उन्होंने वहीं से हिंदी में डी॰ फिल॰ की उपाधि अर्जित की। वे १९५० में राँची आ गये और मनरेसा हाऊस में रहकर सन्त जेवियर्स कॉलेज राँची में हिन्दी और संस्कृत के विभागाध्यक्ष पद पर योगदान किया। अपने गिरते हुए स्वास्थ्य के बावजूद वे जून १९८२ तक राँची विश्वविद्यालय में हिन्दी विभागाध्यक्ष रहे डॉ॰ दिनेश्वर प्रसाद के साथ साहित्य की सतत् सेवा में जुटे रहे। वे दायें पैर में अवसाद से पीड़ित थे, जिसके इलाज के लिए उन्हें माँडर, पटना और अन्त में अखिल भारतीय अयुर्विज्ञान संस्थान, दिल्ली जाना पड़ा, जहाँ १७ अगस्त १९८२ को उनका देहान्त हो गया। उनके पार्थीव शरीर को दिल्ली स्थित निकोल्सन कब्रिस्तान में दफना दिया गया।

यह सब एक परिचय के रूप में। अब मैं वृहद् समाज के प्रति फादर कामिल बुल्के के द्विस्तरीय योगदान की चर्चा करना चाहूंगा - वे न केवल भारत के सुप्रसिद्ध साहित्यकार थे, बल्कि राष्ट्रभाषा हिन्दी के कर्मठ योद्धा भी। परन्तु इन सबसे पहले वे एक ईसाई सन्यासी थे। उन्होंने वचन और कर्म द्वारा अपने इस दायित्व का आजीवन निष्ठापूर्वक निर्वाह किया। वे सब मंचों पर अपने धर्मसंघी परिधान में ही आसीन हुए। तुलसी-जयंती और अन्य समारोहों में अपने अनगिनत सार्वजनिक संबोधनों की यात्राएँ न केवल उन्होंने ईसाई पुरोहित के परिधान में पूरी की, बल्कि मंच पर भी उन्होंने इसी वेशभूषा में अपनी काथलिक पुरोहिताई का साक्ष्य दिया। उनके सन्यासी रूप और सौम्य व्यवहार के कारण लोग आदर से उन्हें बाबा बुल्के कहा करते थे। वे निष्ठापूर्वक प्रतिदिन पवित्र मिस्सा-पूजा का अनुष्ठान करते, लैटिन भाषा में दिव्य वचनों का पाठ करते और याजकीय सेवायें देने में कभी पीछे नहीं रहते। राँची महागिरजाघर में उनके द्वारा अर्पित संध्या-कालीन पवित्र मिस्सा बलिदान में भाग लेने और उनके प्रवचन को सुनने के लिए भक्तजन बड़ी संख्या में आया करते थे। आश्चर्य नहीं कि उन्होंने अपना मन और हृदय लगाकर पूजन-विधि के अनेकानेक हिन्दी ग्रन्थों की भाषा का परिमार्जन कर उसे सुगम और आधुनिक बनाने का बीड़ा उठाया। उनका सर्वाधिक उपयोगी और लोकप्रिय योगदान है, धर्मग्रन्थ पवित्र बाइबिल का हिन्दी अनुवाद और प्रकाशन। इससे पहले उन्होंने चारों सुसमाचारों से संकलित प्रभु येसु मसीह के जीवनवृत्त का प्रकाशन “द सेवियर” नामक ग्रन्थ में किया। इस ग्रन्थ के प्रति पाठकों के उत्साह को देखते हुए उन्होंने “चारों सुसमाचार” शीर्षक के साथ पवित्र बाईबल के नये विधान का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किया। कहने की जरूरत नहीं कि इस अनुवाद का अभूतपूर्व स्वागत हुआ। फादर बुल्के अब पुराने विधान के अनुवाद में दिलोजान से जुट गये और अपने बिगड़ते स्वास्थ्य के बावजूद जीवनपर्यन्त इसी कार्य में जुटे रहे। उनकी असामयिक मृत्यु के कारण धर्मग्रन्थ के शेष १५० पृष्ठों का अनुवाद डॉ॰ दिनेश्वर प्रसाद और डॉ॰ फादर विलियम ड्वायर, येसु समाजी, ने साथ मिलकर १९८५ में सम्पन्न किया। यह सम्पूर्ण पवित्र बाइबिल न केवल हिन्दी-भाषी ईसाई मतावलम्बियों में अति लोकप्रिय है, बल्कि विद्वानों के बीच भी इसकी सराहना अब तक के सर्वाधिक सत्यनिष्ठ हिन्दी अनुवाद और साहित्य की अनमोल कृति स्वरूप

होती है। उत्तर भारत के समस्त हिन्दी-भाषी काथलिक विश्वासी फादर बुल्के के ही अनुवादों का उपयोग उपासना में करते हैं। यह ग्रंथ बहुत-सारे मसीही परिवारों में प्रार्थना करने और मसीही जीवन जीने की प्रेरणा देता है। ऐसी अमूल्य सेवा फा॰ कामिल बुल्के ने भारत की कलीसिया को दी है। साथ ही अन्य धर्मावलम्बियों के प्रति, विशेष रूप से अपने हिन्दु भाई-बहनों के प्रति बुल्के जी के व्यापक लगाव की अनदेखी नहीं की जा सकती। वस्तुतः, हिन्दुओं सहित अन्य धर्मावलम्बी आज अगर ईसाई मत को बेहतर ढंग से समझते हैं तो यह बहुत हद तक फादर बुल्के के अथक प्रयास और समर्पण का फल है। श्वेत वस्त्रधारी सन्यासी महात्मा का इससे अधिक सराहनीय योगदान भला और क्या हो सकता है!

डॉ॰ दिनेश्वर प्रसाद के प्रति हार्दिक आभार प्रकट किये बिना हिन्दी पवित्र बाइबिल की चर्चा अधूरी रह जाएगी, क्योंकि वे शुरू से अन्त तक इस कार्य में फादर बुल्के के अनन्य सहयोगी और सलाहकार मित्र रहे हैं। इसके अलावा उन्होंने फादर बुल्के के अंगरेजी-हिन्दी कोश के संवर्द्धित संस्करण का काम भी अपनी बुजुर्गी और डगमग स्वास्थ्य के बावजूद पूरी लगन के साथ सम्पन्न करके अपने दिवंगत मित्र के प्रति श्रद्धा-सुमन अर्पित कर हिन्दी-प्रेमियों के प्रति अगाध स्नेह का प्रदर्शन किया है। उन पर ईश्वर की असीम कृपा सदा बनी रहे। इनके अलावा फादर बुल्के के साथ इलाहाबाद के स्वर्गीय डॉ॰ रघुवंश के भ्रातृ-सुलभ साहचर्य की चर्चा भी उचित ही होगी। हजारीबाग के निकटवर्ती सीतागढ़ में कुछ समय तक डॉ॰ रघुवंश ने फादर बुल्के के साथ रहकर उन्हें हिन्दी भाषा में दक्ष बनाया। “हरी घाटी” शीर्षक अपने संस्मरण में उन्होंने फादर बुल्के की निष्ठापूर्ण साहित्य-सेवा की अंतरंग झलकियां प्रस्तुत की है।

पवित्र बाईबल पर फादर बुल्के के विलक्षण योगदान की चर्चा मैंने सबसे पहले की, क्योंकि सर्वप्रथम वे एक येसु संघी पुरोहित थे। उन्होंने इसी दायित्व का निर्वाह अपने समस्त जीवन और कार्यों द्वारा किया। उनका सर्वोच्च लक्ष्य था ईश्वर की महत्तर महिमा करना और विश्वासियों के आध्यात्मिक कल्याण के लिए सदा प्रयत्नशील रहना।

इसी परिप्रेक्ष्य में, आईये, हम भारतवर्ष के प्रति उनके अन्य योगदानों पर दृष्टि डालें, जिसे उन्होंने सच्चे हृदय से अपनी मातृभूमि बना लिया। जिस किसी से उनकी मुलाकात हुई, उन्होंने उसे अपना परिचय एक भारतीय के रूप में दिया। वे हमेशा हिन्दी में ही बातें करते थे, जब तक कि अंग्रेजी में ही बातें करने की जरूरत नहीं पड़ती। उनके समस्त साहित्यिक योगदानों में सामाजिक और आस्थागत् प्रभाव का मिश्रण रहा।

महाकवि तुलसीदास जी में फादर बुल्के को न केवल एक सहृदय और अन्तरंग मित्र मिला, बल्कि एक आध्यात्मिक पथप्रदर्शक भी। यही कारण है कि उन्होंने बेहिचक अपना परिचय तुलसी-भक्त के रूप में दिया। तुलसी जी की आध्यात्मिक गहराई में उन्होंने न केवल अपने मसीही विश्वास की सहज उत्कंठा का अनुभव किया, बल्कि आपसी सामंजस्य के भी दर्शन किये। फादर बुल्के ने वैवाहिक और सामाजिक जीवन में महाकवि तुलसीदास द्वारा प्रतिपादित श्रेष्ठ मानव-मूल्यों की सूक्ष्म परख और गहरी समझ को रामकथा के विषद् अध्ययन और

विश्लेषण द्वारा अर्जित किया। इसी कारण वे वार्षिक तुलसी जयन्ती समारोहों सहित अन्य अवसरों पर इन विषयों के उत्कृष्ठ व्याख्याता और मूर्धन्य टीकाकार बनकर उभरे। उन्होंने सीता जी की सत्यनिष्ठा को तराशते हुए श्रेष्ठ हिन्दू पारिवारिक जीवन के उत्कृष्ट मानदण्डों की चमक बिखेरी। उन्होंने ऐसा मसीही आस्था में किया जो दूसरे धर्मों में परमात्मा को क्रियाशील देखता है। इतना ही नहीं, फादर बुल्के ने पाया कि परमात्मा की खोज में प्रयासरत तुलसी जी भक्तिमार्ग को ज्ञानमार्ग की तुलना में श्रेष्ठतर निरूपित करते हैं। विदित है कि सामान्य ईशभक्त के लिए भक्तिमार्ग न केवल अधिक रुचिकर होता है, बल्कि इसके द्वारा उसे परमात्मा के सहज दर्शन भी होते हैं। तुलसीदास द्वारा समर्थित भक्तिमार्ग में फा॰ बुल्के सदाचार और पड़ोसी की सेवा की दोहरी गुणवत्ता देखते हैं। यह पुनः बुल्के के अपने आध्यात्मिक जीवन से मेल खाता है। फादर बुल्के के सन्यासी जीवन में सांसारिक वस्तुओं के प्रति अनासक्ति को नया आयाम तो मिला ही, प्रभु येसु के इस अनन्य शिष्य में प्रार्थना और दैनिक कर्तव्यों के निर्वाह में भी लगन का उत्तरोत्तर संचार होता गया। उन्हें करीब से जानने वाले लोग मित्रों और जरूरतमंद लोगों के प्रति उनके प्रेम को जानते हैं। निस्संदेह उनका साहित्यिक कार्य उन्हें सभी प्रमुख हिन्दी विद्वानों से परिचित कराया। उन्हें वर्ष १९७४ में हिन्दी साहित्य की समर्पित सेवा के लिए पद्मभूषण के उच्च सम्मान से विभूषित किया गया। कम ही लोगों को ज्ञात् होगा कि सार्वजनिक चकाचौंध से परे वे कठिनाइयों से घिरे लोगों का नियमित तौर पर आध्यात्मिक मार्गदर्शन करते और जरूरतमंदों की यथासंभव आर्थिक सहायता भी किया करते थे। स्मरणीय है कि तुलसी जी की आध्यात्मिकता का सर्वोच्च शिखर भी तो जनहित द्वारा परमात्मा के प्रति सम्पूर्ण समर्पण ही है - “परहित सरिस धरम नहीं भाई।” फादर बुल्के के शब्दों में, “तुलसी पूरी श्रद्धा से भगवान् का विधान स्वीकार करते हैं और भरत की तरह यह मानते हैं कि प्रभु की आज्ञा के पालन से बढ़कर उसकी और सेवा नहीं है।”

दिवंगत येसु संघी फादर पीटर पोनेट के हाथ लगे फादर बुल्के के एक पत्र में कविश्रेष्ठ तुलसी पर की गई उनकी उपरोक्त प्रशंसापूर्ण टिप्पणी खुद उन्हीं पर चरितार्थ होती है। पत्र में उन्होंने लिखा है:

> “मुझे विशेषकर इस बात से प्रसन्नता है कि मेरा अंगरेजी-हिन्दी कोश एक सेवा-कार्य है, जो मैं हमारे देश के लिए कर सका, क्योंकि मैं अपने साहित्यिक क्रिया-कलाप को अपने धर्मसंघीय कर्त्तव्य का ही एक भाग मानता हूँ। ईसा के प्रति अपनी भक्ति से ही मुझे भारत और भारतीयों की जितनी हो सके, सेवा की प्रेरणा मिलती है। धर्मसंघीय जीवन में प्रवेश करने के बाद इस समर्पित अस्तित्व के पूर्व पाँच वर्षों के प्रयत्न सतत् रूप से मेरे हृदय में प्रभु के प्रति अनन्य भक्ति पोषित करने में लगाये गये। ईश्वर में आस्था और भक्ति अब कम हो गयी, सो बात नहीं -- कम से कम ऐसी आशा करता हूँ - परन्तु मैं अपने हृदय में जन-जन के प्रति अनुराग और सहानुभूति पोषित करने की विशेष चिन्ता करता हूँ। ... इस पृथ्वी पर मेरी एकमात्र अभिलाषा है -- अधिक से अधिक लोगों की सेवा कर सकना। तुलसीदास की भी ऐसी ही भावना थी। उन्होंने सदा मनुष्यों की सेवा करने का वर माँगा था : ‘ओह, कब मैं ईश्वर की सहायता से तपस्वी का-सा आचरण करूँगा!’

आशा है कि पवित्र धर्मग्रन्थ बाईबल द्वारा ईसाई समुदाय की अमूल्य और उत्कृष्ट सेवा एवं हिन्दी को राष्ट्रभाषा स्वरूप व्यापक समर्थन दिलाने में फादर बुल्के के सतत् अभियान की संक्षिप्त चर्चा द्वारा मैं उनको भारत माता की सच्ची सन्तान और भारतवासियों का सच्चा सेवक निरूपित करने में कुछ हद तक सफल रहा। स्थानीय स्तर पर राँची में और आज यहाँ भारत की राजधानी दिल्ली में उनका जन्म शताब्दी समारोह उनकी व्यापक लोकप्रियता का साक्षी है, न केवल हिन्दी साहित्य जगत् में, बल्कि उन सभी लोगों के बीच, जो इस महान् राष्ट्र की सेवा में अपना जीवन समर्पित करते हैं।

मैं पुनः पद्मभूषण डॉ॰ फादर कामिल बुल्के जन्म-शताब्दी समारोह के कर्मठ आयोजकों एवं भारत के इस महान् सुपुत्र को श्रद्धा-सुमन अर्पित करने के लिए उपस्थित आप सभी महानुभवों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। ईश्वर आप सबको आशीर्वाद प्रदान करे और डॉ॰ फादर बुल्के के मार्गदर्शन में आगे बढ़ने में आप सबको कृतसंकल्प बनाये रखे! धन्यवाद।

+ तेलेस्फोर पी॰ कार्डिनल टोप्पो
राँची के आर्चबिशप